

१. प्रभु जी तुम चंदन हम पानी

प्रस्तावना

* संत रैदास जी, जो रविदास के नाम से भी जाने जाते हैं, वह काशी में रहते थे। उनके पद अनन्य भक्तिभावपूर्ण थे। अनपढ़ होने के बावजूद भी उनकी साधना उच्च प्रकार की थी। उन्होंने 200 से भी ज़्यादा पदों की रचना की है। जिसमें से एक पद हम आज यहां पढ़ेंगे।

यह पद में संत रैदास जी ने भक्त और भगवान के रिश्ते को अलग-अलग उदाहरण के माध्यम से दर्शाया है। जो काफी सुंदर है। तो चलिए यह पद को समझते हैं।

स्वाध्याय

१. निम्न लिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिये :

१. प्रभु चंदन है तो भक्त क्या है?

उत्तर : प्रभु चंदन है तो भक्त पानी है।

२. भक्त दीपक बनकर क्या चाहता है ?

उत्तर : भक्त दीपक की बाती बनकर उजाला फेलाना चाहता है।

३. सोने का महत्व कब बढ़ता है ?

उत्तर : सोने के साथ सुहागा मिलने पर सोने का महत्व बढ़ता है।

२. निम्न लिखित प्रश्नों के दो- तीन वाक्य में उत्तर लिखिये :

१. भक्त किन-किन उदाहरणों द्वारा समजाता कि मैं प्रभु के निकट हूँ – अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर : भक्त चंदन और पानी, बादल और मोर, दीपक और बाती, मोती और धागा तथा स्वामी और दास जैसी उदाहरण देकर समजाता है कि मैं प्रभु के निकट हूँ।

३. उचित जोड़े बनाइए :

अ	ब
1) चंदन	1) मोर
2) धन बन	2) ज्योति
3) दीपक	3) पानी
4) सोना	4) रैदास
5) भक्त	5) सुहागा

(उत्तर : 1-3, 2-1, 3-2, 4-5, 5-4)